भारत विश्व परिदृश्य में ऑस्ट्रेलिया एवं अफ्रीका के समान ही शैलचित्र कला के अंकन के क्षेत्र में अत्यंत समृद्ध है। भारत में पूर्व ऐतिहासिक शैलचित्र, सर्वप्रथम स्पेन के अल्तमिरा की खोज के बारह वर्ष पहले खोजे गए। ए0 सी0 एल0 कार्लाइल ने उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के सोहागीघाट में इन्हें 1967 मे खोजा था।

छत्तीसगढ़ में सर्वप्रथम शैलकला की खोज वर्ष 1910 में सी0 डब्लू0 एंडरसन द्वारा रायगढ़ जिले में सिंघनपुर स्थल पर किया गया। अभी तक छत्तीसगढ़ के 33 जिलो में से लगभग 14 जिलों– कोरिया, मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर, सुरजपुर, बलरामपुर, सरगुजा, कोरबा, जांजगीर–चांपा, महासमुंद, सांरगढ़, धमतरी, कांकेर, कोण्डागांव, नारायणपुर, बस्तर में शैलकला के विभिन्न पुरास्थल प्रकाश में आ चुके है। जिसमें रायगढ़ में शैलकला युक्त शैलाश्रयों की संख्या सर्वाधिक है जिनमें प्रमुख सिंघनपुर, बसनाझर, ओंगना, करमागढ़, कबरापहाड़ तथा लेखामाड़ा के शैलचित्र हैं।

इन शैलाश्रयों में विषयांकन के रूप में आखेट दृश्य, नृत्य, वन्य जीव–जन्तु, पशु–पालन, युद्ध, अभिलेख (शंख लिपि) आदि प्राप्त होते हैं। शैलांकन तकनीक में उत्कीर्णन एवं चित्रात्मक (पेट्रोग्लिफ्स एवं पिक्टोग्राफ) दोनों प्रकार के प्राप्त होते है जिसमें चित्रात्मक तकनीक का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। इसके साथ ही एक अन्य तकनीक स्प्रे–तकनीक से भी चित्रण हुए हैं जो कोरबा, रायगढ़ एवं सरगुजा में अवस्थित हैं। यह सभी चित्र गेरूए, लाल, सफेद, हल्के पीले रंगों से बने हैं जो स्थानीय रूप से प्राप्त प्राकृतिक संशाधनों से बने हैं। छत्तीसगढ़ में इन शैल अंकनों की कालावधि प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के हैं।

वर्तमान में जो प्रदर्शनी आपके समक्ष रखी जा रही है है उसके लिए संसार के पांच महादेश – अफ्रीका, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधिक वस्तुओं का चयन किया गया है। महादेशीय क्रम में उनकी महत्वपूर्ण परम्पराओं का एक प्रतिनिधिक संकलन उपलब्ध कराया जा रहा है। यह दर्शकों के लिए एक ऐसा माध्यम बन सकता है जहाँ से वह मानव सभ्यता की जीवन्त कलाओं के परिवर्तित हो रहे आयामों और पहलुओं में प्रवेश पा सकते है। यह प्रदर्शनी एक सीमा तक दर्शकों के लिए एक प्रयोगात्मक सम्पर्क का सृजन करती है। ऐसा माना जाता है कि मानव की अपने आस–पास के संसार के प्रति चेतना उसको आद्य पुरातन दृश्य और श्रव्य ऐकिक अनुभवों के माध्यम से मिली है। इन्हीं दो इन्द्रियों ने कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए उद्दीपन का काम किया, जो दृश्य और कर्णजनित पूर्वाभासों से उसके पूर्व ऐतिहासिक अतीत से वर्तमान की संस्कृतियों तक सम्प्रेषित होती चली गईं। वर्तमान प्रदर्शनी अद्यतन जीवन्त कला परम्परा की दृष्टि से तीन समुदायों – उड़ीसा के लंजिया सौरा, गुजरात के राथवा भील तथा महाराष्ट्र के वर्ली को भी प्रदर्शित कर रही हैं, जिससे भारतीय संदर्भ में कलात्मक परम्परा की निरंतरता की एक झलक मिल सकें।

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
Indira Gandhi National Centre for the Arts, New Delhi

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चलायमान प्रदर्शनी

विश्व शैलचित्र कला

(1-20 फरवरी, 2023)

आयोजन

आदि दृश्य विभाग

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

एवं

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व अध्ययनशाला

पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

के संयुक्त तत्वावधान में

कार्यक्रम रूपरेखा

आयोजन	समय	विवरण
01 फरवरी, 2023		
विशिष्ट व्याख्यान	12:00 अपराह्न	कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ सेंट्रल इंडियन रॉक आर्ट एंड रीसेंट डिस्कवरी ऑफ रॉक आर्ट इन साउदर्न इंडिया व्याख्यानकर्ता: प्रो० रवि कोरिसेट्टार सीनियर अकादमिक स्कॉलर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली स्थान : सेमिनार हॉल (कला भवन) पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर
उद्घाटन समारोह	2:10 अपराह्न	प्रदर्शनी का उद्घाटन स्थान : युटिलिटी सेन्टर पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़
कार्यशाला	2:30 अपराह्न	इम्प्रेशन:बाल कार्यशाला स्थान : युटिलिटी सेन्टर पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़
02 फरवरी, 2023		
विशिष्ट व्याख्यान	11:30 पूर्वाह्न	छत्तीसगढ़ का पुरातात्विक परिदृश्य व्याख्यानकर्ता: श्री राहुल सिंह सेवानिवृत्त सयुंक्त संचालक संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग छत्तीसगढ़ शासन स्थान : सेमिनार हॉल (कला भवन) पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर रायपुर, छत्तीसगढ़
कार्यशाला	12:40 अपराह्न	इम्प्रेशन: बाल कार्यशाला स्थान : युटिलिटी सेन्टर पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

एवं

पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़

के संयुक्त तत्वावधान में

चलायमान प्रदर्शनी

विश्व शैलचित्र कला

(1-20 फरवरी, 2023)

के उद्घाटन समारोह

में आपको सादर आमंत्रित करते हैं।

मुख्य अतिथि

प्रो० केशरी लाल वर्मा

कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़

परिकल्पना एवं निर्देशन

डॉ० रमाकर पंत

विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य विभाग

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली

स्थान

युटिलिटी सेन्टर

पं० रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़